इतना तो करना स्वामी, जब प्राण तन से निकलें।
होवे समाधि पूरी, जब प्राण तन से निकलें।
माता पितादि जितने, है ये कुटुम्ब सारे।
उनसे ममत्व छुटे, जब प्राण तन से निकलें।
दुष्कर्म दिखावे या दुःख, या रोग मुझको घेरें।
प्रभु का ध्यान न छूटे, जब प्राण तन से निकलें।
इच्छा श्रद्धा तृषा की, होवे जो उस घड़ी में।
उनको भी त्याग कर दूँ जब प्राण तन से निकलें।
ऐ नाथ अर्ज करता, विनती पे ध्यान दीजे।
होवें सकल मनोरथ, जब प्राण तन से निकलें।
बैरी मेरे बहुत से, जो होवे इस जगत में।
उनसे क्षमा करा लूं, जब प्राण तन से निकलें।
परिग्रह का जाल मुझपर, फैला हुआ है स्वामी।
उसमें ममत्व छूटे, जब प्राण तन से निकलें। ध्चझ